विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ **दिनांक 26-06-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

सुप्रभात बच्चों आज फिर सी, सी, ए, के अन्तर्गत अपनी कक्षा को संचालित कर रहा हूँ, ऐ हर दिनों से कुछ अलग हैं इसमें आपको भी स्वतंत्रता दी जाती हैं कि अपने विचार भाव को कविता कहानी चुटकुला इत्यादि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं जिसे लिखकर भेजना चाहते हैं तो भेज सकते हैं।

मैं भी आधुनिक युग को देखते हुए एक कविता प्रस्तुत कर रह हूँ उम्मीद हैं पढ़ने के बाद इससे कुछ सीख मिलेगी और आपको खुशी का अनुभव भी होगा, नई कविता के द्वारा कुछ मेरे विचार।

कविता हैं

मित्रता सूची से बाहर करने पर विचार करते हुए – उघेड़पन

फेसबुक की मित्रता सूची से

गाव के भुल्लन तिवारी को

अन्फ्रेंड **करना चाहता हूँ,**

ये कोशिश पिछले कई माह से चल रही है

मैं फ्रेन्ड लिस्ट में खोजता हूँ ये नाम

ठीक ओके पहुँचकर दिख जाता है

कोई न कोई ठीहा ।

पहली बार जब ये विचार आया

गाँव वाली कर्मनाशा नदी दिख गई

दूसरी बार दिख गया नवलखा बाग,

एक बार जब उँगली रख दी थी

डिलीट ओ के पर,

भुल्लन तिवारी के साथ दिख गए

भान दाऊ !ये होली की तस्वीर थी,

भुल्लन सटकर बैठे थे भान दाऊ से।

दाऊ की मुखाकृति पर,

अटका हुआ अलाप था कोई

या अन्तिम उठान थी फगुआ की,

मैं उन पत्तियों में खो गया ।

'महला दुमहला मनही न भावै

टूटी मठइया के राजी बमभोला

महादेव वैरागी,

मेरा दिल बैठ गया

भुल्लन तिवारी अबकी बार भी बच गए,

हर बार जब खुन्नस बढ़ जाती है

मैं बैठ जाता हूँ, फ्रेड लिस्ट खोलकर,

अबकी बार गाँव का पुरानी बरगद दिख गया,

तोंतों का विशाल झुंड बैठ हुआ।

दरख़्त के हर कोटर से कोई न कोई चेहरा झाँकता हुआ

एक बूढ़ा गिध्द भी दिख गया

बूढ़े गिध्द में दिख गए भुल्लन तिवारी

मैं फिर सोच में पड़ गया –

भुल्लन तिवारी को फ्रेंड से हटाना चाहता हूँ तो

आज में दशकों बाद दिखा गिध्द कहा जाएगा?

एक सपने में बसे हुए दृश्य की फिर हत्या करते हुए

कहाँ जाऊगा मैं ?

मैं जानता हूँ अब ये दृश्य राष्ट्र निर्माण की नीतियों और किसी

राष्ट्रीय अख़बार की चिन्ताओ में शामिल नहीं है,

न ही शामिल हैं मेरी नदी

न ही शामिल हैं मेरा बूढ़ा बरगद

सच तो यै है कि भुल्लन तिवारी भी शामिल नहीं है,

आज भुल्लन तिवारी फिर बच गए

और शायद?

भुल्लन तिवारी में बच गया हूँ मैं।